# ❍ 23 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
## ⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗कभी भी किसी को दुःख तो नहीं दिया ?∗

➢➢ ∗अपना पोतामेल रखा की मेरे में कोई विकार तो नहीं है ?∗

➢➢ ∗अपने क्षमा स्वरुप द्वार शिक्षा दी ?∗

➢➢ ∗सदा खुशहाल रहे ?∗

────────────────────────

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

〰✧ ∗हर व्यक्ति को, बात को पॉजिटिव वृत्ति से देखो, सुनो या सोचो तो कभी जोश या क्रोध नहीं आयेगा।∗ आप मास्टर स्नेह के सागर हो तो आपके नयन, चैन, वृत्ति, दृष्टि में जरा भी और कोई भाव नहीं आ सकता, इसलिए चाहे कुछ भी हो जाये, ∗सारी दुनिया क्यों नहीं आप पर क्रोध करे लेकिन मास्टर स्नेह के सागर दुनिया की परवाह नहीं करो। बेपरवाह बादशाह बनो, तब आपकी श्रेष्ठ वृत्तियों से शक्तिशाली वायुमंडल बनेगा।∗

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

________________________

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं विजयी रत्न हूँ"*

〰✧ सदा अपने को विजयी रत्न अनुभव करते हो? सदा विजयी बनने का सहज साधन क्या है? *सदा विजयी बनने का सहज साधन है-एक बल एक भरोसा। एक में भरोसा और उसी एक भरोसे से एक बल मिलता है। निश्चय सदा ही निश्चिंत बनाता है।*

〰✧ अगर कोई समझते हैं कि मुझे निश्चय है, तो उसकी निशानी है कि वो सदा निश्चिंत होगा और निश्चिंत स्थिति से जो भी कार्य करेगा उसमें जरूर सफल होगा। *जब निश्चिंत होते हैं तो बुद्धि जजमेन्ट यथार्थ करती है। अगर कोई चिंता होगी, फिक्र होगा, हलचल होगी तो कभी जजमेन्ट ठीक नहीं होगी।*

〰✧ तराजू देखा है ना। तराजू की यथार्थ तौल तब होती है जब तराजू में हलचल नहीं हो। *अगर हलचल होगी तो यथार्थ नहीं कहा जायेगा। ऐसे ही, बुद्धि में अगर हलचल है, फिक्र है, चिन्ता है तो हलचल जरूर होगी। इसीलिए यथार्थ निर्णय का आधार है-निश्चयबुद्धि, निश्चिंत।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

---

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

〰✧ जो चैलेन्ज करते हो - सेकण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त करो, उसको प्रैक्टिकल में लाने लिए तैयार हो? *स्व-परिवर्तन की गति सेकण्ड तक पहुँची है?* क्या समझते हो? पुराना वर्ष समाप्त हो रहा है, नया वर्ष आ रहा है, अभी संगम पर बैठे हो।

〰✧ तो *पुराने वर्ष में स्व-परिवर्तन व विश्व परिवर्तन की गति कहाँ तक पहुँची है?* तीव्र गति रही? रिजल्ट तो निकालेंगे ना? तो इस वर्ष की रिजल्ट क्या रही? स्व-प्रति, सम्बन्ध और सम्पर्क प्रति वा विश्व की सेवा के प्रति।

〰✧ इस वर्ष का लक्ष्य मिला? जानते है ना। 'उडता पंछी वा उडती कला' तो इसी लक्ष्य प्रमाण गति क्या रही? *जब सबकी गति सेकण्ड तक पहुँचेगी तो क्या होगा? अपना घर और अपना राज्य, अपने घर लौटकर राज्य में जायेंगे।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

——————————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

〰✧ *स्व अभ्यास में अलबेले मत बनो। क्योंकि अन्त में विशेष शक्तियों के अभ्यास की आवश्यकता है।* उसी प्रैक्टिकल पेपर्स द्वारा ही नम्बर मिलने हैं। *इसलिए फ़र्स्ट डिवीजन लेने के लिए स्व अभ्यास को फ़ास्ट करो। उसमें भी एकाग्रता के शक्ति की विशेष प्रैक्टिस करते रहो।* हंगामा हो और आप एकाग्र हो। साइलेन्स के स्थान और परिस्थिति में एकाग्र होना यह तो साधारण बात है, लेकिन चारों प्रकार की हलचल के बीच एक के अन्त में खो जाओ अर्थात् एकान्तवासी हो जाओ। *एकान्तवासी हो एकाग्र स्थिति में स्थित हो जाओ - यह है महारथियों का महान पुरुषार्थ।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

——————————————————

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
( आज की मुरली के सार पर आधारित... )

✺ *"ड्रिल :- वारिस बनने के लिए सदा श्रीमत पर चलना"*

➳ ➳ मीठे बाबा की यादो ने इस कदर दिल को खींचा.. कि मै आत्मा

मीठे बाबा से रूबरू होने बाबा के कमरे में पहुंच गयी... मीठे बाबा भी मुझ आत्मा के दीदार को आतुर मिले... कमरे में पहुंच मुझ आत्मा ने अपने प्यारे से बाबा को बड़े प्यार से निहारा... और *जनमो के बिछड़े मेरे मन ने सदा का आराम पाया.*.. मीठे बाबा के वरदानों की बौछार में, मै आत्मा सदा का सुकून पा रही हूँ...

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा पर ज्ञान रश्मियां बरसाते हुए बोले :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... ईश्वरीय दौलत का वारिस बनना है... तो ईश्वर पिता की दी हुई श्रीमत को सदा दिल से अपनाओ... *कभी भी श्रीमत की अवेहलना नही करो..*. यह श्रीमत ही अथाह सुखो का अधिकारी बनाएगी... और देवताओ जैसा खुबसूरत जीवन आपकी तकदीर में सजाएगी..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा पर सारा प्यार उंडेलते हुए कह रही हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा... आप न थे श्रीमत न थी तो जीवन कष्टो और दुखो के जंगल के सिवाय कुछ न था... जिसमे मै आत्मा लहूलुहान सी थी... *आपने श्रीमत के हाथो में मुझ आत्मा को सहलाया है, निखारा है और हर गम से उबारा है*..."

❉ *मीठे प्यारे बाबा ज्ञान की लहरों में मेरी बुद्धि को पावन बनाने हेतु बोले :-* "मीठे सिकीलधे बच्चे... *भगवान धरती पर अपनी अतुल धन सम्पदा बच्चों के लिए ही तो लाया है.*.. श्रीमत का हाथ थामे, उस अदभुत सम्पत्ति का मालिक बन सदा की मुस्कराहटों से सज जाओ... ऐसे खुबसूरत वारिस बनकर देवताई घराने में आओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की सारी दौलत को अपने बुद्धि में समेट कर कह रही हूँ :-* "मेरे सच्चे साथी बाबा... मुझ आत्मा को अपना वारिस बनाने परम् धाम से उतर आये हो... मेरे सुखो की चिंता में पराये देश में आ विराजे हो... *ऐसा सच्चा साथ, और ऐसी प्यारी श्रीमत पर मै आत्मा दिल जान से कुर्बान हूँ.*.."

❊ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा पर अपनी अनन्त किरणों की बाँहों का आलिंगन करते हुए बोले ;-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वर पिता बनकर सुखो की जागीरों को... अपने फूल बच्चों के लिए हथेली पर सौगात सा लाया है... इस अमीरी को अपनी तकदीरों में बसा लो... *श्रीमत को सदा स्मृति में रख अपनी चाल और चलन से दिव्यता को झलकाओ..*."

➺ _ ➺ *मै आत्मा अपने मीठे भाग्य को निहारते हुए बोली :-* "प्यारे प्यारे बाबा... अब तक परमत और मनमत ने ही तो मुझ आत्मा के जीवन को सुख की अनुभूतियों से वंचित रखा है... *अब जो आपकी प्यारी श्रीमत मिली है, तो सुखो की वारिस बन मुस्करा रही हूँ.*.. अब श्रीमत में ही प्राण बसते है..." अपने दिल के जज्बात मीठे बाबा को सुना मै आत्मा अपनी सृष्टि पर आ गयी...

---

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
( आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित... )

✺ *"ड्रिल :- जीते जी देह सहित सबसे ममत्व निकाल ट्रस्टी बनकर रहना है*"

➺ _ ➺ अपने सभी बोझ बाबा को देकर, लौकिक और अलौकिक हर जिम्मेवारी को ट्रस्टी हो कर सम्भालते, डबल लाइट स्थिति का अनुभव करते हुए मैं बाबा की याद में कर्मयोगी बन हर कर्म कर रही हूँ। *बाबा का आह्वान कर, बाबा की छत्रछाया के नीचे स्वयं को अनुभव करते अपने सभी कार्य करने के बाद, मैं एकांत में अपनी पलकों को मूंदे अपने प्यारे मीठे बाबा की मीठी सी याद में जैसे ही बैठती हूँ* मुझे ऐसा आभास होता है जैसे मैं एक नन्ही सी बच्ची बन बाबा की गोद में बैठी हूँ और बाबा बड़े प्यार से अपना हाथ मेरे सिर पर फिराते हुए, अपने नयनो में मेरे लिए अथाह प्यार समेटे हुए मुझे निहार रहें

हैं।

➳ _ ➳ हर बोझ से मुक्त, हर गम से अनजान सुंदर, सुहाने बचपन का यह दृश्य मेरे मन को आनन्द विभोर कर देता है। *अपनी पलको को खोल अब मैं विचार करती हूँ कि जब हम ट्रस्टी के बजाए स्वयं को गृहस्थी समझते हैं तो कितने बोझिल हो जाते हैं किंतु ट्रस्टी हो कर जब सब कुछ सम्भालते है तो ऐसी बेफिक्र और निश्चिन्त स्थिति का अनुभव स्वत: ही होता है जैसी निश्चिन्त स्थिति एक बच्चा अपने पिता की गोद मे अनुभव करता है*। संगमयुग पर परमात्म गोद मे पलने का अनुभव कोटो में कोई और कोई में भी कोई कर पाता है, तो *कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जो स्वयं भगवान मेरे सारे बोझ ले कर, अपनी ममतामई गोद मे बिठा कर स्वयं मेरे हर कार्य को सम्पन्न करवा रहा है*।

➳ _ ➳ स्वयं से बातें करती, अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य की सराहना करती, अब मैं आत्मिक स्मृति में स्थित हो कर अपने सम्पूर्ण ध्यान को अपने भाग्यविधाता बाप की याद में एकाग्र करती हूँ और सेकण्ड में मन बुद्धि के विमान पर सवार हो कर, विदेही बन अपने विदेही बाबा से मिलने उनके धाम की ओर चल पड़ती हूँ। *देह से न्यारी इस विदेही अवस्था मे मैं आत्मा ऐसा अनुभव कर रही हूँ जैसा सुखद अनुभव पिंजरे में बंद पँछी पिंजरे से निकलने के बाद अनुभव करता है*। ऐसे ही आजाद पँछी की भांति उन्मुक्त होकर उड़ने का आनन्द लेते हुए मैं आत्मा पँछी अब आकाश को भी पार कर जाती हूँ। उससे और ऊपर फ़रिश्तों की आकारी दुनिया को पार करके अब मैं पहुँच जाती हूँ अपने शिव पिता के पास उनके धाम।

➳ _ ➳ आत्माओं की इस निराकारी दुनिया में जहां चारों और चमकती हुई मणियों का आगार है ऐसी चैतन्य सितारों की जगमग करती अति सुंदर दुनिया परमधाम में पहुंच कर मैं असीम सुख की अनुभूति कर रही हूँ। *इस विदेही दुनिया मे, विदेही बन, अपने बीच रुप परम पिता परमात्मा, संपूर्णता के सागर, पवित्रता के सागर, सर्वगुण और सर्व शक्तियों के अखुट भंडार, ज्ञान सागर, शिव

बाबा के सम्मुख बैठ उनसे मंगल मिलन मनाने का यह सुख बहुत ही निराला है*। कोई संकल्प कोई विचार मेरे मन में नही है। एकदम निर्संकल्प अवस्था। बस बाबा और मैं। *बीज रुप बाप के सामने मैं मास्टर बीज रुप आत्मा डेड साइलेंस की स्थिति का अनुभव करते हुए असीम अतीन्द्रिय सुखमय स्थिति में स्थित हूँ*।

➾ _ ➾ गहन अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करके, अब मैं अपने शिव पिता से आ रही सर्वशक्तियो को स्वयं में समाकर शक्तिशाली बन कर वापिस साकारी दुनिया में लौट रही हूँ। *अपने शिव पिता को हर पल अपने साथ रखते हुए अपने साकारी तन का आधार लेकर इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर मैं अपना पार्ट प्ले कर रही हूँ*। लौकिक और अलौकिक हर कर्तव्य निमित पन की स्मृति में रह कर करते हुए, बेफिक्र बादशाह बन, अपने सभी बोझ बाबा को दे कर उड़ती कला का अनुभव अब मैं निरन्तर कर रही हूँ। करन करावन हार बाबा करवा रहा है यह स्मृति मुझे सदा निश्चिन्त स्थिति का अनुभव करवाती है। *ट्रस्टी होकर सब कुछ सम्भालते, हर पल, हर सेकण्ड स्वयं को परमात्म गोद मे अनुभव करते मैं संगमयुग की मौजों का भरपूर आनन्द ले रही हूँ*।

---

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
( आज की मुरली के वरदान पर आधारित... )

✺ *मैं अपने क्षमा स्वरूप द्वारा शिक्षा देने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मास्टर क्षमा का सागर आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

---

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
( आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित... )

✺ *मैं आत्मा सदा खुशहाल रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव स्वयं को और सर्व को प्रिय लगती हूँ ।*
✺ *मैं खुशनसीब आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
( अव्यक्त मुरलियों पर आधारित... )

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सर्वंश त्यागी आत्मा किसी भी विकार के अंश के भी वशीभूत हो कोई कर्म नहीं करेगी। विकारों का रायल अंश स्वरूप पहले भी सुनाया है कि मोटे रूप में विकार समाप्त हो रायल रूप में अंश मात्र के रूप में रह जाते हैं। वह याद है ना! ब्राह्मणों की भाषा भी रायल बन गई है। अभी वह विस्तार तो बहुत लम्बा है। *मैं ही यथार्थ हूँ वा राइट हूँ - ऐसा अपने को सिद्ध करने के रायल भाषा के शब्द भी बहुत हैं। अपनी कमज़ोरी छिपाकर दूसरे की कमज़ोरी सिद्ध करने वा स्पष्ट करने का विस्तार करना, उसके भी बहुत रायल शब्द हैं। यह भी बड़ी डिक्शनरी हैं। जो वास्तविकता नहीं है लेकिन स्वयं को सिद्ध करने वा स्वयं की कमज़ोरियों के बचाव के लिए मनमत के बोल हैं। वह विस्तार अच्छी तरह से सब जानते हो। सर्वन्श त्यागी की ऐसी भाषा नहीं होती - जिसमें किसी भी विकार का अंश मात्र भी समाया हुआ हो। तो मंसा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा विकारों के अंश मात्र से भी परे, इसको कहा जाता है 'सर्वंश त्यागी'। सर्व अंश का त्याग।*

✵ *"ड्रिल :- स्वयं को सिद्ध करने वा स्वयं की कमज़ोरियों के बचाव के लिए मनमत के बोल नहीं बोलना।*

➳ _ ➳ बाबा को याद करते हुए मैं आत्मा मन बुद्धि से पहुंच जाती हूं परमधाम... और बाबा से मिलकर बाबा को अपने साथ लेकर आ जाती हूं... *रिमझिम की एक फुहार बनकर नीचे आसमान में... मुझे वहां कुछ बादल दिखाई देते हैं... और मैं आ जाती हूं बादलों के अंदर... जैसे ही मैं बादल में प्रवेश करती हूं... बादल गहरे रंग के हो जाते हैं... और बादलों की गति बढ़ने लगती हैं... मैं बादलों में बैठकर उनकी गति को मन ही मन फील करती हूं... मुझे एहसास होता है... कि जैसे बाबा ने मुझमें इतनी शक्तियां भर दी हैं कि मैं अब इस धरा को अपने रिमझिम फुहार से हरी-भरी कर सकूं और बंजर जमीन से फसल का जीवन दान दे सकूं...और साथ ही उदास चेहरों पर हंसी ला सकूं...*

➳ _ ➳ *जैसे-जैसे बादलों की गति बढ़ती जाती है... वह आपस में एक दूसरे से टकराते हैं... और शिवबाबा बिजली बनकर चमकते हैं... और बाबा से शक्तियां लेकर मैं बारिश की फुहार बनकर इस धरा पर बरसने लगती हूं... और ऐसा प्रतीत हो रहा है... मानों सभी आत्माएं जन्म जन्म की प्यासी हो... और मुझसे वरदानों की बारिश करने के लिए कह रही हो...* मैं अपनी शक्तियों की वर्षा उन पर करने लगती हूं... तभी मैं अचानक देखती हूं कि... एक स्थान पर कुछ आत्माएं बैठी हुई है... और एक आत्मा आगे बैठकर उन्हें कुछ पढ़ा रही है... और मैं देखती हूं कि... वह सभी आत्माएं उस एक आत्मा की बातें बहुत गहराई से और प्यार से सुन रही है...

➳ _ ➳ परंतु कुछ समय बाद मैं देखती हूं कि... वह आत्मा अपने आप को देहभान में लाते हुए... बाबा की श्रीमत को पूरा फॉलो नहीं करते हुए... उन सभी आत्माओं को अपने ज्ञान अभिमान करते हुए... कुछ बातें बता रही है... वह अपनी मन बुद्धि में परमात्मा को शामिल नहीं करते हुए सिर्फ अपनी मनमत से आत्माओं को कुछ बातें बताने की चेष्टा कर रही है... परंतु उसके सामने बैठी सभी आत्माएं कुछ असंतुष्ट सी नजर आ रही है... मेरा जैसे ही ध्यान उन आत्माओं पर जाता है... मैं उनकी भावनाओं को समझ जाती हूँ... और *बाबा से लगातार शक्तियां लेते हुए बारिश की फुहार बनकर सामने बैठी उस आत्मा के

मन बुद्धि में प्रवेश कर जाती हूँ... और मैं उस आत्मा के मुख मंडल द्वारा उन सभी आत्माओं को कहती हूं कि... मैं आज जो कुछ भी हूं जो कुछ भी मुझे ज्ञान मिला है वह सिर्फ परमात्मा के द्वारा ही मिला है...*

➳ _ ➳ और मैं कहती हूं कि मुझे परमात्मा रोज नया नया ज्ञान मुरली द्वारा देते हैं... जिससे मैं श्रीमत का पूर्ण रुप से पालन कर पाती हूं... मैं जो भी कुछ ज्ञान सुना रही हूं वह सिर्फ और सिर्फ परमात्मा द्वारा दिए हुए श्रीमत के कारण ही सुना पा रही हूं... इतना कहकर मैं उस आत्मा की मन बुद्धि से वापस बाहर निकल आती हूं... और मैं देखती हूं कि... वह आत्मा एकदम परिवर्तित हो चुकी है... और उस पर मेरे कहे हुए शब्दों का प्रभाव पड़ रहा है... और *वह परमात्मा का बार-बार धन्यवाद करते हुए उन आत्माओं को बाबा के ज्ञान द्वारा संतुष्ट करने का पुरुषार्थ कर रही है... वह अपने आप को सिद्ध करने के लिए किसी भी प्रकार के मनमत का साथ नहीं ले रही है... तथा मैं देखती हूं कि... वहां बैठी सभी आत्माएं एकदम शीतल भाव से, शांत भाव से संतुष्ट होकर उस आत्मा की बातें सुन रही है...*

➳ _ ➳ वहां का यह चित्र देखकर मेरा मन अति हर्षित हो रहा है... और मैं परमात्मा को लगातार अपने साथ अनुभव कर रही हूं... और रिमझिम फुहार से और परमात्मा द्वारा दी हुई शक्तियों को रिमझिम फुहार में परिवर्तन कर... इस पूरे संसार में फैला रही हूं... क्रोध में जलती हुई आत्माएं और सभी असंतुष्ट आत्माएं श्रीमत से बाहर जाती आत्माएं सभी अपने साथ परमात्मा को अनुभव करने लगती है... और मैं यह चित्र देखकर बाबा को धन्यवाद करती हूं... फिर से अपने आप को उस बादल से निकालकर इस देह में विराजमान कर लेती हूं... और इस देह में विराजमान होते-होते *मैं अपने आप से यह वादा करती हूं... कि मैं पुरुषार्थ की राह में कभी भी अपने आप को सिद्ध करने के लिए मनमत का सहारा नहीं लूंगी... और सदा पुरुषार्थ में श्रीमत की राह पर चलूंगी... इसी भाव से मैं इस सृष्टि पर अपनी वाइब्रेशन फैलाने लगती हूं...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔